Lecture No 01

Name of the College. A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
L.N.M.U Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt - A.I.H.&C

Lession - Plan for Class B.A Part II (H) Paper IV

Date. 21-06-21

Name of the Topic - (Konark temple of Orisa)

कोणार्क का सूर्यमंदिर :— उड़ीसा की स्थापत्यकला की सबसे बड़ी उपलब्धि कोणार्क का सूर्यमंदिर है। यह शब्द कोण + अर्क से बना है, जिसका भाव है – कोण पर सूर्यमंदिर। यह संभव है कि सूर्य की किरणें इस स्थान पर पहुँचकर दक्षिणायन हो जाती है, इस कारण उस स्थान का कोणार्क नाम पड़ा। परन्तु भौगोलिक स्थिति ऐसी नहीं है। कर्क रेखा इस स्थान के उत्तरी भाग से गुजरती है। यह स्थान कर्क रेखा पर स्थित भी नहीं है। यह पुरी से 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह मंदिर नरसिंह देव प्रथम (तेरहवी सदी) के शासनकाल में निर्मित हुआ था मंदिर के भग्नावशेष से ही संतोष करना पड़ता है। वर्षा के कारण काला होने से इसे लोक 'काला पगोडा' कहते है। कोणार्क जाने सूर्यरथ की आकार को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था, जिसकी बुनियादी में सात अलंकृत घोड़े रथ खीचते से शात होते है। मंदिर ऊँची धरातल पर (जगती) पर खड़ा है। जिसमे दस फुट ऊँचे अलंकृत बारह पहिए दिखलायी पड़ते है। उनका पुरा 11 इंच तथा सोलह इंडो का वह पहिया है। यहाँ उड़ीसा शैली के चारो (देवल, जगमोहन, नट, भोग) आकार के बने है।

PTO

②

परन्तु वर्तमान समय में संवेद्ध ठीक नहीं पड़ते। सम्पूर्ण भाग में 865 फुट लंबे तथा 540 फुट चौड़े प्रांगन में बनी है। प्रावडिया में मंदिर में प्रवेश करते है। देवल तथा जगमोहन ऊँचे चबूतरे पर स्थित है। इसका पूरा आकार पट्टियो सहित प्रचुर मात्रा में अलंकृत है। छोटी सीमा में इतना गंभीर अलंकरण आश्चर्य का विषय है। चारों दिशाओं में केन्द्रीय रथ के अनेक प्रक्षेपण बने है। मीनार और भग्न हो जाने से इसकी गरिमा नष्ट हो गई है। जगमोहन के ऊपरी भाग में पिरामिड जैसी छत तीन आकार सहित निर्मित है। गुंबज के साथ विशाल आमलक शिला दिख पड़ती है। मीनार के संवद्ध पत्थर जमीन पर गिरे पड़े है। इसके मूल रूप की कल्पना में रुककर यही कहना पड़ता है। कि किसी प्रतिभावान कलाकार ने इसकी योजना बनायी थी या बनायी होगी। इसके स्थापत्य में पिछली सैकड़ो वर्षों के अनुभव का उपयोग किया गया है, इसलिए इसके प्रत्येक आकार में सामंजस्य तथा मेल है। सभी एक साथ बँधे है। धरातल से देवल की मीनार 225 फुट ऊँची रही होगी। मंदिर की कुर्सी-ओड़ी में दो छोटे मंदिरनुमा आकार है। गर्भगृह में मानवीय आकार की काले पत्थर की आकृतियाँ रखी है। शिल्पियों ने लोककला मार्गों का खुलकर का प्रयोग किया है।

भारती कुमारी
A.I.H.Sc
Date 21-06-21